शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 51 वां वर्ष

ई – पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 51 अंक – 22 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2026 सोमवार 25 – 1 जून 2026 मूल्य पांच रूपये

मुख्यमंत्री की कार्यशैली बनी कांग्रेस की सबसे बडी कमजोरी?

⇨ नगर निगम चुनावों की हार नेतृत्व और निर्णयों पर गंभीर सवाल

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश के चार नगर निगम चुनावों के परिणाम केवल स्थानीय निकायों के चुनावी नतीजे नहीं हैं, बल्कि इन्हें प्रदेश की सियासत में एक बड़े राजनीतिक संदेश के रूप में देखा जा रहा है। धर्मशाला, मंडी और सोलन में भाजपा की जीत तथा केवल पालमपुर में कांग्रेस की प्रतिष्ठा बच पाना इस बात का संकेत है कि प्रदेश की जनता सरकार के कामकाज और नेतृत्व की शैली को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर रही है। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू की कार्यप्रणाली और निर्णयों ने कांग्रेस को इस स्थिति तक पहुंचाया है?

इस चुनाव में जनता ने सीधे तौर पर कांग्रेस सरकार के साढ़े तीन वर्षो के प्रदर्शन पर अपनी राय दे दी है। चूंकि चुनाव पार्टी चिन्ह पर लड़े गए, इसलिए यह कहना मुश्किल है कि हार केवल स्थानीय कारणों से हुई। जनता ने सीधे कांग्रेस और उसके नेतृत्व को परखा और परिणाम पार्टी के लिए चिंताजनक साबित हुए।

प्रदेश की राजनीति में लंबे समय से यह चर्चा रही है कि सरकार का संचालन अत्यधिक केंद्रीकृत हो गया है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं की अनदेखी से भी सरकार और संगठन के बीच दूरी बढ़ी है। फैसलों में सामूहिकता के बजाये सीमित दायरे में निर्णय लेने की प्रवृत्ति ने संगठन को कमजोर किया। चुनाव परिणामों ने इसी असंतोष को राजनीतिक रूप से उजागर कर दिया है।

मुख्यमंत्री ने सत्ता संभालने के बाद वित्तीय संकट को अपनी सरकार का सबसे बड़ा मुद्दा बनाया। हर मंच से प्रदेश की आर्थिक स्थिति का उल्लेख किया गया, लेकिन जनता एक समय के बाद संकट की चर्चा नहीं बल्कि समाधान देखना चाहती है। आम लोगों के लिए महंगाई, रोजगार, विकास कार्यो की गति और रोजमर्रा की सुविधाएं अधिक महत्वपूर्ण होती हैं। नगर निगम चुनावों में मतदाताओं ने शायद यही संदेश दिया है कि केवल आर्थिक चुनौतियों का हवाला देना पर्याप्त नहीं है, जनता परिणाम चाहती है।

सरकारी कर्मचारियों और पेंशनरों का मुद्दा भी कांग्रेस के लिए भारी पड़ता दिखाई दिया। पुरानी पेंशन योजना लागू करने के फैसले से शुरुआत में सरकार को राजनीतिक लाभ मिला था, लेकिन बाद में विभिन्न कर्मचारी वर्गो की नाराजगी खुलकर सामने आती रही। वेतन, भत्तों और अन्य वित्तीय मामलों को लेकर असंतोष लगातार बढ़ता गया। भाजपा ने चुनाव प्रचार के दौरान इसी नाराजगी को बड़े मुद्दे के रूप में उठाया और ठन चुनाव परिणामों में इसका असर दिखाई दिया है।

कांग्रेस की दस गारंटियां भी इस चुनाव में उसके खिलाफ जाती हुई नजर आई। सत्ता में आने से पहले जिन वादों को कांग्रेस ने अपनी सबसे बड़ी ताकत बनाया था, वही अब विपक्ष के हाथ में हथियार बन गए हैं। भाजपा लगातार यह प्रचार करती रही कि अधिकांश गारंटियां अधूरी हैं या अपेक्षित रूप से लागू नहीं हुई हैं। जनता के बीच भी यह सवाल उठता रहा कि जिन वादों के आधार पर सरकार बनी थी, उनका वास्तविक लाभ लोगों तक कब पहुंचेगा। चुनाव परिणामों ने संकेत दिया कि यह मुद्दा अभी भी कांग्रेस के लिए चुनौती बना हुआ है।

धर्मशाला का परिणाम मुख्यमंत्री के लिए व्यक्तिगत और राजनीतिक दोनों दृष्टि से बड़ा झटका माना जा रहा है। भाजपा नेता और पूर्व कांग्रेस मंत्री सुधीर शर्मा ने जिस तरह कांग्रेस को पराजित किया, उसने प्रदेश कांग्रेस की चुनावी रणनीति और नेतृत्व की क्षमता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। यह केवल एक सीट की हार नहीं बल्कि राजनीतिक संदेश है कि कांग्रेस अपने पुराने नेताओं और प्रभावशाली क्षेत्रों में भी पकड़ कमजोर करती जा रही है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि मुख्यमंत्री की कार्यशैली को लेकर संगठन के भीतर भी असंतोष मौजूद है। कई वरिष्ठ नेताओं को निर्णय प्रक्रिया से दूर रखने की शिकायतें समय-समय पर सामने आती रही हैं। सरकार और संगठन के बीच समन्वय की कमी का असर चुनावी मैदान में दिखाई देना स्वाभाविक है। जब कार्यकर्ता उत्साहित नहीं होता तो उसका प्रभाव सीधे मतदाताओं तक पहुंचता है।

प्रदेश में यह धारणा भी मजबूत हुई है कि सरकार कुछ चुनिंदा लोगों और अधिकारियों के भरोसे चल रही है। विपक्ष लगातार मित्रों की सरकार जैसे आरोप लगाता रहा है। राजनीति में आरोपों की सच्चाई से अधिक महत्वपूर्ण जनता की धारणा होती है। यदि मतदाता यह मानने लगे कि निर्णय कुछ लोगों तक सीमित हैं और आम जनता की आवाज़ सत्ता तक नहीं पहुंच रही, तो इसका नुकसान चुनावों में दिखाई देता है।

इन परिणामों ने कांग्रेस हाईकमान के सामने भी नई चुनौती खड़ी कर दी है। यदि पार्टी इन नतीजों को केवल स्थानीय चुनावों की हार मानकर नजरअंदाज करती है, तो यह राजनीतिक भूल साबित हो सकती है। तीन नगर निगमों में हार और केवल एक में जीत यह संकेत देती है कि जनता का भरोसा कमजोर हो रहा है। ऐसे में नेतृत्व परिवर्तन की मांग भी अब पहले से अधिक मुखर होती दिखाई दे रही है।

कर्नाटक में हाल ही में नेतृत्व परिवर्तन को लेकर हुए राजनीतिक घटनाक्रम के बाद हिमाचल में भी यह चर्चा तेज हो गई है कि क्या कांग्रेस को प्रदेश में नया नेतृत्व देने पर विचार करना चाहिए। पार्टी के भीतर एक वर्ग मानता है कि जनता के बीच नया संदेश देने और संगठन में नई ऊर्जा लाने के लिए बड़ा निर्णय आवश्यक हो सकता है। मुख्यमंत्री समर्थक इसे विपक्ष और असंतुष्ट नेताओं द्वारा खड़ा किया गया राजनीतिक सढयंत्र बताते हैं।

लेकिन नगर निगम चुनावों ने एक बात स्पष्ट कर दी है कि जनता का धैर्य तेजी से कम हो रहा है। यदि आने वाले समय में सरकार की कार्यशैली, निर्णय प्रक्रिया और जनसंपर्क में बदलाव नहीं दिखाई देता तो यह असंतोष 2027 के विधानसभा चुनाव तक और बड़ा रूप ले सकता है।

नगर निगम चुनावों का संदेश साफ है कि यह हार केवल उम्मीदवारों की नहीं, बल्कि सरकार की कार्यशैली और नेतृत्व पर जनता के बढ़ते अविश्वास की है। कांग्रेस के सामने अब सबसे बड़ा सवाल यह नहीं है कि चुनाव क्यों हारे, बल्कि यह है कि क्या मौजूदा नेतृत्व जनता का विश्वास दोबारा जीत पाने में सक्षम है। यदि इस सवाल का जवाब समय रहते नहीं खोजा गया, तो 2027 में यह हार केवल नगर निगमों तक सीमित नहीं रहेगी।

राज्यपाल ने जनगणना-2027 के स्व-गणना अभियान का शुभारम्भ किया

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने लोक

भवन से जनगणना-2027 के प्रथम चरण के अंतर्गत स्व-गणना अभियान का शुभारम्भ किया। यह अभियान 1 जून से 15 जून 2026 तक प्रदेशभर में संचालित किया जाएगा। इसके तहत नागरिक डिजिटल पोर्टल के माध्यम से स्वयं अपनी जनगणना संबंधी जानकारी ऑनलाइन दर्ज कर सकेंगे। राज्यपाल ने स्वयं पोर्टल पर अपनी जानकारी दर्ज कर स्व-गणना प्रक्रिया पूरी की और प्रदेशवासियों को इस राष्ट्रीय अभियान में सक्रिय भागीदारी का संदेश दिया।

इस अवसर पर जनगणना संचालन, हिमाचल प्रदेश की निदेशक दीप शिखा शर्मा और विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने राज्यपाल को डिजिटल जनगणना प्रक्रिया तथा इसके विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। राज्यपाल ने कहा कि जनगणना केवल जनसंख्या के आंकड़े जुटाने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह देश और प्रदेश की विकास योजनाओं, जनकल्याणकारी नीतियों और प्रशासनिक निर्णयों की आधारशिला है।

उन्होंने प्रदेशवासियों से 1 जून से 15 जून के बीच स्व-गणना प्रक्रिया को पूरा करने की अपील की। उन्होंने कहा कि स्व-गणना पूरी होने के बाद प्राप्त होने वाली पहचान संख्या को सुरक्षित रखना आवश्यक है। यह संख्या अगले चरण में घर-घर जाकर जानकारी एकत्रित करने वाले प्रगणकों को उपलब्ध करानी होगी, जिससे जनगणना कार्य अधिक सुगमता और दक्षता के साथ पूरा किया जा सके।

राज्यपाल ने बताया कि जनगणना का दूसरा चरण 16 जून से 15 जुलाई 2026 तक चलेगा। इस दौरान प्रगणक घर-घर जाकर परिवारों से संबंधित जानकारी एकत्रित करेंगे। उन्होंने कहा कि सही और प्रमाणिक आंकड़े प्रभावी प्रशासन तथा योजनाबद्ध विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। केंद्र और राज्य सरकार की अनेक कल्याणकारी योजनाएं जनसांख्यिकीय आंकड़ों के आधार पर तैयार की जाती हैं।

राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने कहा कि वर्ष 2011 के बाद बदलती विकास आवश्यकताओं और नई चुनौतियों को देखते हुए जनगणना-2027 के आंकड़े भविष्य की नीतियों और योजनाओं के लिए बेहद महत्वपूर्ण होंगे। उन्होंने सभी नागरिकों से इस अभियान में सहयोग देने का आहवान करते हुए कहा कि जनभागीदारी ही इसकी सफलता की कुंजी है और सटीक आंकड़े हिमाचल प्रदेश के समावेशी एवं सतत विकास की मजबूत नींव साबित होंगे।

राज्यपाल ने एनसीसी के माउंट दियो टिब्बा अभियान-2026 को रवाना किया

शिमला/शैल। राज्यपाल कविंद्र गुप्ता ने लोक भवन से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के माउंट दियो टिब्बा

अभियान-2026 को झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में पर्वतारोहण अभियान पर जाने वाले कैडेट्स और स्टाफ मौजूद रहे। राज्यपाल ने अभियान दल को शुभकामनाएं देते हुए उनके सफल और सुरक्षित अभियान की कामना की।

कैडेट्स को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि साहसिक गतिविधियां युवाओं में आत्मविश्वास, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और कठिन परिस्थितियों का सामना करने की ताकत विकसित करती हैं। उन्होंने कहा कि एनसीसी केवल एक संगठन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, देशभक्ति और अनुशासन का प्रतीक है, जो युवाओं को जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देता है।

उन्होंने कहा कि माउंट दियो टिब्बा अभियान में भाग ले रहे कैडेट्स देश की युवा शक्ति की क्षमता और सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उनका समर्पण, मेहनत और दृढ़ संकल्प अन्य युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। राज्यपाल ने विश्वास जताया कि यह चुनौतीपूर्ण अभियान प्रतिभागियों के साहस, आत्मविश्वास और टीम भावना को और मजबूत करेगा।

6,001 मीटर की ऊंचाई तक संचालित होने वाला माउंट दियो टिब्बा अभियान एनसीसी के प्रमुख पर्वतारोहण अभियानों में से एक है। इसमें देशभर से चयनित कैडेट्स शामिल हैं, जिन्हें अटल बिहारी वाजपेयी पर्वतारोहण एवं संबद्ध खेल संस्थान, सोलंग वैली में विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। अभियान के दौरान दल को ग्लेशियर यात्र, बर्फीले क्षेत्रों में संचालन और ऊंचे पर्वतीय इलाकों में रहने जैसी कठिन चुनौतियों का सामना करना होगा।

इस अभियान का नेतृत्व कुनाल शर्मा कर रहे हैं। कार्यक्रम में विकास भारद्वाज, राजीव कपूर, संदीप भारद्वाज, आदित्य वर्मा सहित कई वरिष्ठ सैन्य और प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे।

सरकारी सेवा में नियुक्ति से पहले अभ्यर्थियों का डोप टेस्ट अनिवार्य

सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लंबित भुगतान जल्द होंगे जारी

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने प्रशासनिक सचिवों के साथ आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में सरकारी सेवा में नियुक्ति से

पहले अभ्यर्थियों का डोप टेस्ट अनिवार्य करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने सभी विभागों को इस संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करने को कहा। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि प्रदेश सरकार युवाओं को नशे की गिरफ्त से बचाने और नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है।

बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने बजट घोषणा के अनुरूप चतुर्थ श्रेणी के सेवानिवृत्त कर्मचारियों की लंबित ग्रेच्युटी और अवकाश नकदीकरण राशि का भुगतान शीघ्र सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उनके वैध वित्तीय लाभ समय पर मिलना सरकार की प्राथमिकता है।

मुख्यमंत्री ने विभागाध्यक्षों को करुणामूलक आधार पर नौकरी के लिए लंबित मामलों का पूरा विवरण उपलब्ध करवाने को कहा ताकि सरकार इन मामलों पर जल्द और उचित निर्णय ले सके। उन्होंने विभिन्न विभागों में रिक्त पदों की जानकारी भी मांगी और कहा कि खाली पदों को भरने की प्रक्रिया में तेजी लाई जाएगी। इसी क्रम में उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार ने जूनियर ऑफिस असिस्टेंट के 500 पद भरने का निर्णय लिया है।

नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने चिट्टा तस्करी में संलिप्त पाए गए सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ की गई कारवाई का ब्यौरा भी तलब किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने चिट्टा और अन्य नशीले पदार्थों के खिलाफ जन आंदोलन छेड़ा है तथा नशा माफिया के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि युवाओं का भविष्य सुरक्षित रखना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है।

बैठक में हाल ही में आए तूफान से हुए नुकसान पर भी चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने वन भूमि पर गिरे और उखड़े पेड़ों का विस्तृत आंकड़ा एकत्रित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ऐसे पेड़ों को हटाने के लिए एक जून से विशेष अभियान शुरू किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि गिरे हुए पेड़ों का प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित किया जाए, क्योंकि देरी से राज्य को आर्थिक और संसाधन संबंधी नुकसान उठाना पड़ता है।

वंचित बच्चों की शिक्षा के लिए टोंगलेन ट्रस्ट को हर संभव सहयोग देगी प्रदेश सरकार: मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। धर्मशाला स्थित टोंगलेन ट्रस्ट के एक प्रतिनिधिमंडल ने ट्रस्ट के निदेशक थेरचिन ग्याल्तसेन के नेतृत्व में मुख्यमंत्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खू से भेंट कर विद्यालय के लिए भूमि पट्टे की मांग रखी। यह विद्यालय वंचित एवं बेसहारा बच्चों को शिक्षा

प्रदान कर रहा है। मुख्यमंत्री ने ट्रस्ट को प्रदेश सरकार की ओर से हर संभव सहयोग का आश्वासन देते हुए कहा कि 14 वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों को प्रतिमाह 1,000 रुपये तथा 14 वर्ष से अधिक आयु के विद्यार्थियों को 2,500 रुपये प्रतिमाह की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

उन्होंने वंचित एवं जरूरतमंद बच्चों के कल्याण के लिए ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा और मानवीय सेवा के क्षेत्र में इस प्रकार की पहल समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस अवसर पर राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी, विधायक हरीश जनारथा, ट्रस्टी दोरजे तथा पार्षद पलकित नेगी भी उपस्थित रहे।

शैल समाचार संपादक मण्डल

संपादक- बलदेव शर्मा
सयुक्त संपादकः जे.पी.भारद्वाज
विधि सलाहकार: ऋचा शर्मा

देवभूमि हिमाचल में धार्मिक पर्यटन सर्किट विकसित करने की आवश्यकता: राज्यपाल

मां ज्वाला देवी के दर्शन कर राज्यपाल ने प्रदेश की खुशहाली की कामना की

शिमला/शैल। राज्यपाल कविंद्र गुप्ता ने हिमाचल प्रदेश में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक समर्पित धार्मिक पर्यटन सर्किट विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया

है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के प्रमुख मंदिरों, शक्तिपीठों, मठों और धार्मिक स्थलों को बेहतर सड़क, आधुनिक सुविधाओं और मजबूत संपर्क व्यवस्था से जोड़ने की दिशा में कार्य किया जाना चाहिए। इससे प्रदेश की धार्मिक पहचान को मजबूती मिलेगी और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे।

राज्यपाल ने यह बात कांगड़ा जिले स्थित प्रसिद्ध मां ज्वाला देवी मंदिर में दर्शन करने के बाद मीडिया से बातचीत के दौरान कही। इस अवसर पर लेडी गवर्नर बिंदु गुप्ता भी उनके साथ उपस्थित रहीं। राज्यपाल ने मां ज्वाला देवी से प्रदेश और देशवासियों की सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली की कामना की।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में मां ज्वाला देवी, मां ब्रिजेश्वरी देवी, मां चिंतपूर्णी, मां नैना देवी और मां चामुंडा देवी जैसे अनेक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल मौजूद हैं, जो देश-विदेश के श्रद्धालुओं की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं। इन सभी स्थलों को एक व्यापक धार्मिक पर्यटन सर्किट से जोड़ने की आवश्यकता है, ताकि श्रद्धालुओं को बेहतर यात्रा और सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा सकें।

राज्यपाल ने कहा कि धार्मिक पर्यटन हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने प्रदेश सरकार और संबंधित विभागों से धार्मिक स्थलों पर विश्वस्तरीय सुविधाएं विकसित करने का आहवान किया। साथ ही उन्होंने धार्मिक स्थलों की पवित्रता और आध्यात्मिक वातावरण को बनाए रखने पर भी जोर दिया। राज्यपाल ने मंदिर प्रशासन और स्थानीय प्रशासन द्वारा श्रद्धालुओं के लिए की गई व्यवस्थाओं की सराहना भी की।

चिकित्सकों के लिए लाई जाएगी इनसेंटिव स्कीम: मुख्यमंत्री

मेडिकल कॉलेजों में भरे जाएंगे 230 नए पद, स्वास्थ्य सेवाओं को मिलेगी मजबूती

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभाग की उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार जल्द ही

चिकित्सकों के लिए विशेष इनसेंटिव स्कीम लागू करेगी। इस योजना के तहत डॉक्टरों को 20 प्रतिशत अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। योजना में मेडिकल कॉलेजों के प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और असिस्टेंट प्रोफेसर भी शामिल होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य चिकित्सकों को बेहतर कार्य वातावरण देना और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार लाना है।

उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार मेडिकल कॉलेजों में असिस्टेंट प्रोफेसर के 110 पद तथा पैरा मेडिकल स्टाफ के 120 पद भरेगी। इससे चिकित्सा शिक्षा को मजबूती मिलेगी और मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को आईजीएमसी शिमला में नए मातृ एवं शिशु अस्पताल के निर्माण के लिए भूमि चिन्हित करने के निर्देश भी दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य के सभी मेडिकल कॉलेजों में पीजी सीटों की संख्या बढ़ा रही है। टांडा मेडिकल कॉलेज में 57, मंडी में 29, नाहन में 32, चंबा में 33, हमीरपुर में 67 और आईजीएमसी शिमला में 96 पीजी सीटें बढ़ाई जाएंगी। उन्होंने कहा कि इससे विशेषज्ञ डॉक्टरों की संख्या बढ़ेगी और मरीजों को बेहतर उपचार मिल सकेगा।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में 3000 करोड़ रुपये खर्च कर आधुनिक मशीनें और उपकरण खरीदे जा रहे हैं। सभी स्वास्थ्य संस्थानों में स्टाफ की कमी भी जल्द दूर की जाएगी। मुख्यमंत्री ने विश्वास जताया कि आने वाले वर्षों में हिमाचल प्रदेश स्वास्थ्य सेवाओं और हेल्थ टूरिज्म के क्षेत्र में नई पहचान बनाएगा।

एक प्रतिशत ब्याज पर उच्च शिक्षा ऋण दे रही प्रदेश सरकार

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा है कि प्रदेश सरकार विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए मात्र एक प्रतिशत ब्याज दर

पर ऋण सुविधा उपलब्ध करवा रही है। पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना से लाभान्वित अनुसूचित जनजातीय क्षेत्र के 21 विद्यार्थियों ने मुख्यमंत्री से भेंट कर अपने शैक्षणिक अनुभव साझा किए। इस दौरान मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

मुख्यमंत्री ने बताया कि राज्य सरकार डॉ. वाई.एस. परमार विद्यार्थी ऋण योजना के तहत विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा और व्यावसायिक पाठयक्रमों के लिए 20 लाख रुपये तक का ऋण केवल एक प्रतिशत ब्याज दर पर प्रदान कर रही है। उन्होंने विद्यार्थियों से इस योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आहवान करते हुए कहा कि आर्थिक कठिनाइयों के कारण किसी भी छात्र की पढ़ाई प्रभावित नहीं होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए लगातार सुधार कर रही है। राज्य के 156 से अधिक स्कूलों में सीबीएसई पाठयक्रम शुरू किया गया है, जहां कला, विज्ञान और वाणिज्य संकायों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा क्षेत्र में किए गए सुधारों के कारण हिमाचल प्रदेश हाल ही में हुए एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण में 13वें स्थान से बढ़कर 6वें स्थान पर पहुंचा है।

मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि प्रदेश सरकार ने बेटियों की विवाह योग्य आयु 18 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष कर दी है। इस अवसर पर शिक्षा सचिव राकेश कंवर, उच्च शिक्षा निदेशक हरीश कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

उत्तराखंड – पूर्वोत्तर राज्यों में बढ़ सकती हैं बादल फटने की घटनाए

टिकेंद्र पंवर की पुस्तक 'सिटी लिमिट्स – द क्राइसिज ऑफ अर्बनाइजेशन' का विमोचन

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने शिमला के ऐतिहासिक गेयटी थियेटर में नगर निगम शिमला के

पूर्व उप – महापौर टिकेंद्र पंवर द्वारा संपादित पुस्तक 'सिटी लिमिट्स – द क्राइसिज ऑफ अर्बनाइजेशन' का विमोचन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने पर्यावरण संरक्षण, सुनियोजित शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों पर चिंता व्यक्त की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश को प्रकृति ने स्वच्छ वातावरण और जल संसाधनों का अनमोल उपहार दिया है, जिनका संरक्षण प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि शिमला शहर में पिछले वर्षों में तेजी से बदलाव हुए हैं और जहां पहले जंगल हुआ करते थे, वहां अब इमारतें खड़ी हो गई हैं। प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए सुनियोजित निर्माण अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि शिमला शहर में भूमिगत डक्ट परियोजना, आधुनिक सब्जी मंडी परिसर, अंडरपास और 24 घंटे जलापूर्ति जैसी परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा सर्कुलर रोड को चौड़ा करने और हरित क्षेत्रों को बढ़ाने के प्रयास भी जारी हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि हिम – चंडीगढ़, हिम – पंचकूला और कांगड़ा में एयरो सिटी जैसी नई शहरी परियोजनाएं भी प्रस्तावित हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले तीन वर्षों में हिमाचल प्रदेश ने दो बड़ी प्राकृतिक आपदाओं का सामना किया है। अब बादल फटने की घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा रहा है क्योंकि ये घटनाएं केवल ऊंचाई वाले क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहीं। उन्होंने आशंका जताई कि भविष्य में उत्तराखंड और पूर्वोत्तर राज्यों में भी ऐसी घटनाएं बढ़ सकती हैं।

इस अवसर पर झारखंड उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति तरलोक सिंह चौहान ने भी जिम्मेदार शहरीकरण, यातायात प्रबंधन और संस्थागत जवाबदेही की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में शिमला के महापौर सुरेन्द्र चौहान सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने ईद – उल – जुहा की शुभकामनाएं दी

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने प्रदेशवासियों, विशेष तौर पर मुस्लिम समुदाय को, ईद – उल – जुहा की शुभकामनाएं दी।

मुख्यमंत्री ने मंगल कामना करते हुए कहा कि यह त्यौहार समाज को सदभाव, एकता और आपसी सौहार्द का सन्देश देता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हमें समावेशी और सामंजस्यपूर्ण समाज बनाने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने प्रदेशवासियों से राज्य की प्रगति और समृद्धि के लिए मिलजुल कर कार्य करने का आहवान किया।

कुराश कप में कांस्य पदक विजेता सौरव सुमन ने मुख्यमंत्री से की भेंट

शिमला/शैल। एशियन कुराश कप (सीनियर वर्ग) में कांस्य पदक

जीतने वाले खिलाड़ी सौरव सुमन ने मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू से भेंट की। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता 22 से 25 मई 2026 तक उज्बेकिस्तान के नुकुस शहर में आयोजित की गई थी, जिसमें सौरव सुमन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक हासिल किया।

सौरव सुमन वर्तमान में जल शक्ति विभाग में कनिष्ठ अभियंता के पद पर कार्यरत हैं और शिमला जिले के मतियाना क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतकर उन्होंने हिमाचल प्रदेश और देश का नाम रोशन किया है।

मुख्यमंत्री ने सौरव सुमन को इस उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए उनकी मेहनत, लगन और समर्पण की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रदेश के खिलाड़ी लगातार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं, जिससे अन्य युवाओं को भी प्रेरणा मिल रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि खेल केवल शारीरिक क्षमता ही नहीं, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास और संघर्ष की भावना भी विकसित करते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सौरव सुमन भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाते रहेंगे।

मुख्यमंत्री ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आगामी प्रतियोगिताओं के लिए शुभकामनाएं भी दीं।

मंडी मध्यस्थता योजना में डीबीटी की संभावनाएं तलाशने के निर्देश

सेब उत्पादकों को समय पर भुगतान सुनिश्चित किया जाए:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने बागवानी विभाग की बैठक की अध्यक्षता करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि मंडी मध्यस्थता योजना

के तहत बागवानों को भुगतान के लिए प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) की संभावनाएं तलाश की जाएं। उन्होंने कहा कि वर्तमान व्यवस्था में बागवानों को नकद भुगतान के स्थान पर अन्य सामग्री देकर भुगतान किया जाता है, जिसे अधिक पारदर्शी और सुविधाजनक बनाने की आवश्यकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से भुगतान की व्यवस्था लागू होने से छोटे और सीमांत सेब उत्पादकों को समय पर आर्थिक सहायता मिल सकेगी तथा उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस दिशा में जल्द ठोस कदम उठाए जाएं।

बैठक में आगामी सेब सीजन की तैयारियों पर भी चर्चा की गई। मुख्यमंत्री ने विभाग को निर्देश दिए कि इस वर्ष के सेब उत्पादन का अनुमान पहले से तैयार किया जाए तथा बागवानों की सुविधा के लिए अग्रिम तैयारियां सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष मंडी मध्यस्थता योजना के तहत लगभग 132 संग्रह केंद्र स्थापित किए जाने प्रस्तावित हैं और आवश्यकता के अनुसार इनकी संख्या बढ़ाई जाए ताकि किसानों और बागवानों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

मुख्यमंत्री ने एचपीएमसी के उत्पादों के बेहतर प्रबंधन और विपणन पर भी जोर दिया। उन्होंने निर्देश दिए कि एप्पल जूस कंसंट्रेट सहित अन्य उत्पादों का प्रभावी विपणन किया जाए तथा उत्पादों की शीघ्र बिक्री के लिए नीलामी केंद्रों की संख्या बढ़ाई जाए।

उन्होंने पूरी खरीद प्रक्रिया को डिजिटल करने के निर्देश देते हुए कहा कि राज्य सरकार सेब उत्पादकों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और पिछले साढ़े तीन वर्षों में किसानों एवं बागवानों के कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण पहल की गई हैं।

प्रेम जो न्याय देता है वह समर्पण है, कानून जो न्याय देता है वह दंड है। .....महात्मा गांधी

सम्पादकीय

आत्मनिर्भरता का आधार बनती पीएम स्वनिधि योजना

भारत की अर्थव्यवस्था की असली ताकत केवल बड़े उद्योगों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और कॉर्पोरेट निवेश में ही नहीं, बल्कि उन करोड़ों मेहनतकश लोगों में भी निहित है जो सड़कों, बाजारों और गलियों में अपना छोटा-सा कारोबार चलाकर न केवल अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं बल्कि शहरी अर्थव्यवस्था को भी गतिशील बनाए रखते हैं। रेहड़ी-पटरी विक्रेता, फेरीवाले, चाय और नाश्ते के ठेले वाले, सब्जी और फल विक्रेता लंबे समय तक देश की आर्थिक व्यवस्था का ऐसा हिस्सा रहे जिन्हें आवश्यक तो माना गया, लेकिन औपचारिक वित्तीय तंत्र में शायद ही कभी उचित स्थान मिला। प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना ने इसी ऐतिहासिक कमी को दूर करने का प्रयास किया है।

कोविड-19 महामारी के दौरान जब देशभर में आर्थिक गतिविधियां ठप हो गई थीं, तब सबसे अधिक प्रभावित वर्गों में सड़क किनारे कारोबार करने वाले लाखों छोटे विक्रेता भी शामिल थे। उनकी आय का स्रोत लगभग समाप्त हो गया था और उनके पास किसी प्रकार की सामाजिक या आर्थिक सुरक्षा नहीं थी। ऐसे समय में वर्ष 2020 में शुरू की गई पीएम स्वनिधि योजना केवल एक ऋण योजना नहीं थी, बल्कि यह अनौपचारिक क्षेत्र के करोड़ों लोगों के लिए आर्थिक पुनर्वास और सम्मानजनक जीवन की नई शुरुआत थी।

आज इस योजना के तहत 75 लाख से अधिक लाभार्थियों को 17,800 करोड़ रुपये से अधिक के ऋण वितरित किए जा चुके हैं और 1.12 करोड़ से अधिक ऋण स्वीकृत हो चुके हैं। इसकी सबसे बड़ी सफलता यह है कि लगभग 95 प्रतिशत लाभार्थियों ने पहली बार किसी औपचारिक वित्तीय संस्था से ऋण प्राप्त किया। यह आंकड़ा केवल बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच का नहीं, बल्कि वित्तीय समावेशन की एक नई क्रांति का संकेत है।

पीएम स्वनिधि की एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देना है। लाखों रेहड़ी-पटरी विक्रेता अब डिजिटल लेन-देन कर रहे हैं। इससे न केवल उनकी आय और कारोबार में पारदर्शिता आई है, बल्कि उन्हें औपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बनने का अवसर भी मिला है। डिजिटल भुगतान के साथ कैशबैक प्रोत्साहन और यूपीआई आधारित क्रेडिट सुविधाओं ने छोटे व्यापारियों को आधुनिक आर्थिक ढांचे से जोड़ा है। यह डिजिटल इंडिया अभियान की जमीनी सफलता का भी एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

योजना का सामाजिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। लगभग 46 प्रतिशत महिला लाभार्थियों की भागीदारी यह दर्शाती है कि आर्थिक सशक्तिकरण का लाभ समाज के उस वर्ग तक भी पहुंच रहा है जो अक्सर संसाधनों और अवसरों से वंचित रह जाता है। इसके अतिरिक्त लगभग 70 प्रतिशत लाभार्थियों का वंचित और हाशिये पर रहने वाले समुदायों से होना इस योजना की समावेशी प्रकृति को प्रमाणित करता है। 'स्वनिधि से समृद्धि' जैसी पहलें केवल ऋण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि लाभार्थियों को विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़कर उनके जीवन की समग्र गुणवत्ता सुधारने का प्रयास कर रही हैं।

देश के अनेक हिस्सों में अभी भी ऐसे लाखों विक्रेता हैं जो इस योजना के दायरे से बाहर हैं। वित्तीय साक्षरता, डिजिटल जागरूकता और ऋण प्रक्रिया को और अधिक सरल बनाना आवश्यक है। साथ ही यह सुनिश्चित करना भी जरूरी है कि लाभार्थियों को केवल ऋण ही नहीं, बल्कि विपणन, कौशल विकास और सामाजिक सुरक्षा की स्थायी सुविधाएं भी मिलती रहें।

पीएम स्वनिधि भारत की कल्याणकारी नीतियों का एक सफल और प्रभावी मॉडल बनकर उभरी है। इसने यह साबित किया है कि यदि सरकार की योजनाएं समाज के सबसे कमजोर वर्ग तक सही तरीके से पहुंचें तो वे केवल आर्थिक सहायता नहीं देतीं, बल्कि आत्मविश्वास, सम्मान और आत्मनिर्भरता का नया आधार भी तैयार करती हैं। पीएम स्वनिधि जैसी योजनाएं यह सुनिश्चित कर रही हैं कि समाज का कोई भी वर्ग पीछे न छूटे। यही इस योजना की सबसे बड़ी उपलब्धि और सबसे बड़ा संदेश है।

असहमति व विभाजित दुनिया में इस्लामिक शिक्षा शांति की स्थापना में हो सकते हैं सहायक

गौतम चौधरी

ऐसे समय में, जब समाज संदेह, अफवाहों, वैचारिक ध्रुवीकरण और परस्पर शत्रुता के कारण लगातार विभाजित होते जा रहे हैं, शांति और सामाजिक संतुलन की जिम्मेदारी पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। हम देख रहे हैं, दुनिया के कई देश आपस में इसलिए एक-दूसरे के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं क्योंकि उनकी धार्मिक मान्यता एक-दूसरे से भिन्न हैं। ऐसी परिस्थिति में हमें मानवता को उपर रखना होगा और असहमति को छोड़ स्वीकार्यता को अपनानी होगी। इस मामले में मुसलमान दुनिया का नेतृत्व कर सकते हैं। मुसलमानों के लिए यह जिम्मेदारी केवल सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि एक गहरी आध्यात्मिक नैतिक भी है। इस्लाम, जिसका मूल शब्द ही सलामी अर्थात शांति से निकला है, अपने अनुयायियों को जीवन के हर क्षेत्र में करुणा, धैर्य, न्याय और सौहार्द का मार्ग अपनाने की शिक्षा देता है।

दुर्भाग्य से आधुनिक सार्वजनिक विमर्श के शोर, राजनीतिक उकसावों और सोशल मीडिया की उत्तेजनात्मक संस्कृति के बीच इस्लाम का यह मूल संदेश अक्सर दब जाता है। प्रतिक्रिया, क्रोध और प्रतिशोध को शक्ति का प्रतीक मान लिया गया है, जबकि इस्लाम संयम, विवेक और नैतिक गरिमा को वास्तविक ताकत मानता है। ऐसे दौर में पवित्र कुरान और सुन्नत की मूल शिक्षाओं की ओर लौटना अत्यंत आवश्यक हो जाता है-वे शिक्षाएँ जो हमेशा संघर्ष के बजाय शांति, कलह के बजाय संवाद और अफवाह के बजाय सत्य पर जोर देती हैं।

इस मामले में मुफ्ती तुफैल खान कादरी साफ शब्दों में कहते हैं, ''पवित्र कुरान, शांति को केवल एक नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि ईमान का आवश्यक हिस्सा घोषित करता है। अल्लाह फरमाता है-रहमान के बंदे वे हैं जो धरती पर विनम्रता से चलते हैं, और जब अज्ञानी उनसे कठोरता से बात करते हैं, तो वे शांति की बातें करते हैं। (सूरह अल-फुरकान 25:63)

तुफैल साहब फरमाते हैं, ''यह आयत मुसलमानों को सिखाती है कि वे द्वेष का उत्तर द्वेष से नहीं, बल्कि गरिमा और शांति से दें। आज के समय में, जब विशेषकर सोशल मीडिया पर तत्काल प्रतिक्रिया देना सामान्य प्रवृत्ति बन चुका है, यह शिक्षा अत्यंत क्रांतिकारी प्रतीत होती है। यह उकसावे के क्षणों में संयम और अराजकता के बीच विवेकपूर्ण व्यवहार का संदेश देती है।''

आज की दुनिया में अफवाहें और अप्रमाणित सूचनाएँ सामाजिक अशांति का बड़ा कारण बन चुकी हैं। इस मामले में तुफैल खान साहब कहते हैं, ''कुरान इस विषय में स्पष्ट चेतावनी देता है-''ऐ ईमान वालों! यदि कोई दुष्ट व्यक्ति तुम्हारे पास कोई खबर लाए, तो उसकी जांच कर लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम अज्ञानता में किसी को नुकसान पहुंचा बैठो और फिर अपने किए पर पछताओ। (सूरह अल-हुजुरात 49 :6)

यह आयत आधुनिक सूचना-युग के लिए असाधारण मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है। आज बिना सत्यापन के संदेशों को आगे बढ़ा देना सामान्य बात बन गई है, जबकि एक छोटी-सी अफवाह भी किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा नष्ट कर सकती है, सामाजिक तनाव बढ़ा सकती है और हिंसा को जन्म दे सकती है। इस्लाम ऐसी लापरवाही को स्वीकार नहीं करता, बल्कि हर व्यक्ति पर सत्य की जांच करने की नैतिक जिम्मेदारी डालता है।

तुफैल कहते हैं, ''पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नत भी इसी शिक्षा को और अधिक स्पष्ट करती है। उन्होंने फरमाया-मुसलमान वह है जिसके हाथ और जुबान से लोग सुरक्षित रहें। (सहीह अल-बुखारी)

यह हदीस बताती है कि किसी मुसलमान की पहचान केवल उसके धार्मिक कर्मकांडों से नहीं, बल्कि उसके व्यवहार, शब्दों और सामाजिक आचरण से होती है। यदि किसी के शब्द नफरत फैलाते हैं या उसके कर्म समाज में अशांति पैदा करते हैं, तो यह इस्लामी मूल्यों के विपरीत है। मक्का में भीषण अत्याचारों और अपमानों के बावजूद पैगंबर मुहम्मद ने धैर्य, क्षमा और नैतिक दृढ़ता का मार्ग अपनाया। उनका जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि वास्तविक शक्ति आक्रामकता में नहीं, बल्कि आत्मसंयम और करुणा में निहित होती है।

तुफैल कहते हैं, ''एक अन्य महत्वपूर्ण हदीस में कहा गया है-उन लोगों में से मत बनो जिनकी अपनी कोई सोच नहीं होती, जो कहते हैं कि यदि लोग हमारे साथ अच्छा करेंगे तो हम भी अच्छा करेंगे, और यदि वे बुरा करेंगे तो हम भी बुरा करेंगे। बल्कि अपने आप को इस बात का आदी बनाओ कि यदि लोग अच्छा करें तो तुम भी अच्छा करो, और यदि वे बुरा करें तो भी तुम बुरा न करो। (तिर्मिज़ी 200)

यह शिक्षा नैतिक स्वतंत्रता और चरित्र की ऊँचाई का आहवान करती है। मुसलमानों को अपने आसपास की नकारात्मकता का प्रतिबिंब बनने के बजाय उससे ऊपर उठने की शिक्षा दी गई है। विशेष रूप से सामाजिक तनाव, सांप्रदायिक उकसावे या राजनीतिक ध्रुवीकरण के समय यह सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

इसके साथ ही इस्लाम समाज में मेल-मिलाप और एकता को अत्यधिक महत्व देता है। hindi.islamonweb.net के अनुसार, ''कुरान कहता है-निस्संदेह, मोमिन आपस में भाई-भाई हैं, इसलिए अपने भाइयों के बीच सुलह करा दो, और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर दया की जाए। (सूरह अल-हुजुरात 49 :10)

यह आयत केवल आंतरिक धार्मिक एकता तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यापक सामाजिक जिम्मेदारी की ओर भी संकेत करती है। मुसलमानों को समाज में पुल बनने की शिक्षा दी गई है, दीवार नहीं। चाहे पड़ोस हो, कार्यस्थल हो, शैक्षणिक संस्थान हों या सार्वजनिक जीवन हर स्थान पर उन्हें समझ, संवाद और सद्भाव को बढ़ावा देने वाला आचरण अपनाना चाहिए।

आज जब दुनिया को डर, नफरत और विभाजन की कहानियों से प्रभावित किया जा रहा है, मुसलमानों को सचेत रूप से शांति के दूत के रूप में अपनी भूमिका को पुनः स्थापित करना होगा। इसका अर्थ अन्याय के सामने मौन रहना नहीं है, बल्कि भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के बजाय सिद्धांतों, न्याय और नैतिकता पर आधारित प्रतिक्रिया देना है। इसका अर्थ यह है कि क्रोध को अपने व्यवहार पर हावी न होने दिया जाए, बल्कि ईमान और नैतिक विवेक को मार्गदर्शक बनाया जाए।

अफवाहों से बचना, नफरत को अस्वीकार करना और उकसावे का विरोध करना कमजोरी नहीं, बल्कि इस्लामी शिक्षाओं में निहित वास्तविक शक्ति का परिचायक है। हर वह शब्द जो दया के साथ बोला जाता है, हर वह अफवाह जिसे फैलने से रोका जाता है, और हर वह क्षण जब गुस्से के बजाय धैर्य को चुना जाता है-ये सब मिलकर एक अधिक शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज की नींव रखते हैं।

दुनिया को और अधिक संघर्षपूर्ण आवाज़ों की आवश्यकता नहीं है। उसे ऐसे दिलों की जरूरत है जो घाव भर सकें, ऐसे शब्दों की जरूरत है जो लोगों को जोड़ सकें, और ऐसे कर्मों की जरूरत है जो मानवता को प्रेरित कर सकें। मुसलमानों के लिए यही वह मार्ग है जिसकी शिक्षा उनका धर्म प्रारंभ से देता आया है । शांति, करुणा, सत्य और मानव गरिमा का मार्ग।

नोट : यह आलेख बरेलवी फिरके के इस्लामिक विद्वान मुफ्ती तुफैल खान की बातचीत और इंटरनेट पर उपलब्ध वैद्धिक सामग्री के आधार पर तैयार किया गया है।

एआई का जनजातीय भाषाओं में संवाद: समावेशी विकास का द्योतक

श्रीमती रंजना चोपड़ा
सचिव
जनजातीय कार्य मंत्रालय
भारत सरकार

हमारे देश भर में फैले जंगलों, पहाड़ियों और दूरदराज की बस्तियों में, एक शांत लेकिन सफल परिवर्तन चल रहा है। जनजातीय समुदाय लंबे समय से भारत की विकास गाथा के केंद्र में अपने उचित स्थान का इंतजार कर रहे थे। आज वे राष्ट्र की प्रगति के सक्रिय वास्तुकार के रूप में उभर रहे हैं। जनजातीय गरिमा उत्सव की यही भावना है। विकसित भारत की यात्रा का एक राष्ट्रीय उत्सव, जहां प्रगति भूगोल या परिस्थिति का विशेषाधिकार नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक का समान रूप से अधिकार है।

महत्वाकांक्षा का पैमाना

यह समझने के लिए कि प्रौद्योगिकी जनजातीय विकास के लिए अपरिहार्य क्यों हो गई है, किसी को पहले चुनौती की व्यापकता को समझना चाहिए। प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम – जनमन), धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान

(डीएजेजीयूए), राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन और संबंधित पहलों में 549 जिलों और 30 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 2,911 ब्लॉकों के 63,000 से अधिक गांवों को शामिल किया गया है, जिससे 5.5 करोड़ से अधिक आदिवासी नागरिक लाभान्वित हुए हैं।

विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) पर विशेष ध्यान देने के साथ, इन प्रयासों का उद्देश्य आवास, पेयजल, स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, कनेक्टिविटी और आजीविका जैसी आवश्यक सेवाओं का सम्पूर्ण कवरेज सुनिश्चित करना है। इस तरह के विविध और विस्तृत इलाके में हर परिवार तक पहुंचने के लिए ऐसी प्रणाली की आवश्यकता होती है जो डेटा – संचालित, कनेक्टेड और उत्तरदायी होती है और यही हम तैयार कर रहे हैं।

इस वर्ष जनजातीय गरिमा उत्सव का आयोजन लगभग चार विषयगत सप्ताह के आसपास किया जा रहा है, जो एक साथ जनजातीय विकास के पूर्ण आयाम को दर्शाते हैं। उद्घाटन का विषय, ''विकास के एक वाहक के रूप में प्रौद्योगिकी'' इस बात को दर्शाता है कि कैसे डिजिटल सिस्टम, विज्ञान और नवाचार भारत के कुछ दूरस्थ समुदायों तक शासन और अवसर का विस्तार करने में मदद कर रहे हैं। इस दृष्टिकोण के केंद्र में एक सरल सिद्धांत निहित है।

जनजातीय भाषाओं, संस्कृतियों, विरासत और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का पर्याप्त सम्मान करते हुए विकास को अंतिम दूरी तक पहुंचना चाहिए।

प्रौद्योगिकी द्वारा जनजातीय गरिमा को बढ़ावा उद्देश्य के साथ निर्देशित होने पर प्रौद्योगिकी क्या हासिल कर सकती है, इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण बिरसा 101 यानी सिकल सेल रोग के लिए भारत की पहली स्वदेशी सीआरआईएसपीआर – आधारित जीन थेरेपी है। सिकल सेल रोग लंबे समय से जनजातीय आबादीके लिए स्वास्थ्य की एक बड़ी चुनौती पेश कर रहा है और भारत अब समानता और पहुंच में निहित उन्नत विज्ञान के साथ उस चुनौती का जवाब दे रहा है। जनजातीय कार्य मंत्रालय ने वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), सीएसआईआर – इंस्टीटयूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी (आईजीआईबी) और सीरम इंस्टीटयूट ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से अनुसंधान, नैदानिक परीक्षण इंफ्रास्ट्रक्चर और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण का समर्थन करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। सीएसआईआर – आईजीआईबी में हाल ही में एक संगोष्ठी में वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं और सिकल सेल योद्धाओं को एक साथ लाया गया, जो वैज्ञानिक प्रगति और प्रयासों के पीछे की मानवीय तात्कालिकता दोनों को दर्शाता है। साझा लक्ष्य स्पष्ट है: एक किफायती, एकमुश्त उपचारात्मक उपचार विकसित करना जो जरूरतमंद हर आदिवासी परिवार तक पहुंच सके। बीआईआरएसए 101 केवल चिकित्सा के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि से भी बढ़कर है। यह एक घोषणा है कि भारत का सबसे उन्नत विज्ञान अपने सबसे पात्र समुदायों की सेवा करेगा।

यह दृढ़ विश्वास एक पहल से कहीं अधिक गहरा है। ट्रेडिशनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) और आयुर्जेनोमिक्स जैसे प्रयास दर्शाते हैं कि कैसे आधुनिक तकनीक आदिवासी समुदायों द्वारा लंबे समय से संरक्षित समृद्ध औषधीय और पारिस्थितिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण, मान्यीकरण और संरक्षण में मदद कर सकती है।

समावेशन की यही भावना इस बात को आकार दे रही है कि कैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता को जनजातीय विकास के साथ जोड़ा जा रहा है। इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में, मंत्रालय ने एक सरल लेकिन दृढ विश्वास पर आधारित एआई – सक्षम प्लेटफार्मो की श्रृंखला प्रस्तुत की, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया कि भाषा एक बाधा नहीं है जिसे दूर किया जाना है, बल्कि एक पहचान है जिसका उत्सव मनाया जाना चाहिए। आदि वाणी, जनजातीय भाषाओं के लिए एआई – संचालित अनुवादक, टेक्स्ट – टू – टेक्स्ट और टेक्स्ट – टू – स्पीच अनुवाद, ओसीआर और आदिवासी भाषाओं में सरकारी योजना की जानकारी के वितरण का समर्थन करता है, जिससे नागरिकों को घर पर बोलने वाली भाषा में सार्वजनिक सेवाओं से जुड़ने में सक्षम बनाया जाता है। ट्राइबॉट एक बहुभाषी संवादी एआई सहायक है, जो दूरदराज के क्षेत्रों में नागरिकों को तत्क्षण मार्गदर्शन और शिकायत निपटारे में सहायता प्रदान करके इस प्रयास को और मजबूत करता है।

भगवान बिरसा मुंडा सेल और आई आई टी दिल्ली के साथ आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान भी इन प्रयासों पर चर्चा की गई, जो जनजातीय भाषाओं के दीर्घकालिक संरक्षण और सुदृढ़ीकरण सहित एआई के सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और समुदाय – केंद्रित इस्तेमाल पर केंद्रित थी।

प्रौद्योगिकी सांस्कृतिक अभिकथन और आर्थिक सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली माध्यम भी बन रही है। आगामी ट्राइबएक्स प्लेटफॉर्म का उद्देश्य जनजातीय कलाओं, भाषाओं, पारंपरिक ज्ञान, संगीत, शिल्प और सांस्कृतिक अनुभवों को बढ़ावा देने के लिए एक डिजिटल इकोसिस्टम बनाना है। इस प्रयास को पूरा करते हुए, जनजातीय भारत का प्रस्तावित जीआई संभावित कला और शिल्प एटलस भौगोलिक संकेत क्षमता के साथ जनजातीय हस्तशिल्प, वन उत्पादों और पारंपरिक कला रूपों का डिजिटल रूप से मानचित्रण करेगा, जिससे ब्रांडिंग, बाजार पहुंच और जनजातीय बौद्धिक विरासत की पहचान को मजबूत करने में मदद मिलेगी। पायलट आधार पर पांच राज्यों के जनजातीय अनुसंधान संस्थानों में इनोवेशन हब की योजना बनाई गई है, जो नवाचार के नेतृत्व वाले आदिवासी उद्यमियों और स्टार्टअप के लिए डिजाइन और उत्पाद विकास सहायता, जीआईएस – आधारित योजना डैशबोर्ड और इनक्यूबेशन इंफ्रास्ट्रक्चर को जोड़कर और आगे बढ़ेंगे।

प्रौद्योगिकी जनजातीय समुदायों तक शासन के तरीके को समान रूप से बदल रही है। पीवीटीजी घरेलू सर्वेक्षणों के लिए पीएम – जनमन के तहत सर्वेक्षण सेतु दूरदराज के क्षेत्रों में कल्याण वितरण की तत्क्षण, जियो – टैग निगरानी को सक्षम बनाता है। 18 राज्यों और 1 केंद्र शासित प्रदेश में संचालित, इस प्लेटफॉर्म ने 8,552 सर्वेक्षणकर्ताओं के समर्थन के साथ पहले ही 3.43 लाख घरेलू प्रस्तुतियां दर्ज की हैं। इस तरह की डेटा – संचालित प्रणालियां यह सुनिश्चित करने में मदद करती हैं कि प्रत्येक पात्र परिवार की पहचान की जाए और उसे आवश्यक सेवाओं से जोड़ा जाए। इसके साथ ही मंत्रालय दावा प्रस्तुतीकरण, जीआईएस – आधारित मानचित्रण, वर्कफ्लो की निगरानी और शिकायत निवारण को सुव्यवस्थित करने के लिए एक एआई – सक्षम वन अधिकार अधिनियम शासन मंच विकसित कर रहा है। साथ में, ये पहल आदिवासी नागरिकों के लिए शासन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और सुलभ बना रही हैं।

जनजातीय समुदाय: विकसित भारत के वाहक एक क्षण ऐसा होता है, जो उस सार को पकड़ लेता है, जिसके लिए हम काम कर रहे होते हैं। यह किसी नीतिगत दस्तावेज या मंत्रिस्तरीय समीक्षा में नहीं पाया जाता है। यह तब पाया जाता है जब दूरदराज की बस्ती की एक आदिवासी महिला, तकनीक से, भाषा से सशक्त होती है और उसे इस बात का अहसास होता हो कि उसकी बात को राष्ट्र सुन रहा है। ऐसे में वह अपनी शर्तो पर सरकारी सेवाओं से जुड़ती है और पूरी गरिमा के साथ जवाब प्राप्त करती है। वह क्षण किसी यात्रा का अंत नहीं है। यह भारत की राष्ट्रीय गाथा में एक नए अध्याय की शुरुआत है।

जनजातीय गरिमा उत्सव इस संदेश को गर्व के साथ ले जाता है। जनजातीय समुदाय, अपनी दृढता, अपने पारिस्थितिक ज्ञान, अपनी कलात्मक परंपराओं और इस भूमि में अपनी गहरी जड़ों के साथ, विकसित भारत की दहलीज पर इंतजार नहीं कर रहे हैं, बल्कि वे इसके सबसे शक्तिशाली और प्रेरक वाहकों में शामिल हैं। जैसे – जैसे प्रौद्योगिकी दूरियों को पाटती है, जैसे – जैसे विज्ञान उपचार प्रदान करता है, जैसा कि एआई जंगलों और पहाड़ियों की भाषाओं में बोलता है, और जैसे – जैसे शासन सबसे दूर के गांव के अंतिम परिवार तक पहुंचता है, हम हर दिन भारत के करीब आते हैं जो न केवल व्यापकता के रूप में विकसित है, बल्कि अपनी मानवता में परिपूर्ण है। यह वह विकसित भारत है जिसे हम माननीय प्रधानमंत्री के विजन से प्रेरित होकर एक साथ मिलकर निर्मित कर रहे हैं।

हिमालयी अर्थव्यवस्था विकसित भारत 2047 की प्रगति को देगी नई गति: डॉ. जितेंद्र सिंह

शिमला। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान तथा प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा है कि हिमालयी अर्थव्यवस्था आने वाले वर्षो में भारत की आर्थिक प्रगति का एक प्रमुख आधार बनेगी और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने कहा कि देश की आर्थिक वृद्धि का अगला चरण उन क्षेत्रों और संसाधनों से आएगा, जिनका अब तक पर्याप्त दोहन नहीं हो पाया है, विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र की जैव संपदा और प्राकृतिक संसाधनों से।

पालमपुर स्थित सीएसआईआर – हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (आईएचबीटी) में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अरोमा मिशन और फ्लोरीकल्चर मिशन जैसी विज्ञान आधारित पहलों को नई गति मिली है। इन कार्यक्रमों ने हिमालयी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में किसानों, महिलाओं, युवाओं, स्टार्टअप्स और उद्यमियों के लिए नए आर्थिक अवसर पैदा किए हैं। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर – आईएचबीटी हिमालयी जैव संसाधनों को औषधि, पोषण, स्वास्थ्य, सौंदर्य प्रसाधन, पुष्पकृषि और कृषि जैव – प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक उत्पादों और तकनीकों में बदलने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश आज सुगंधित जंगली गेंदे के तेल का देश में अग्रणी उत्पादक बन चुका है, जिससे किसानों और उद्यमियों को बेहतर आय के अवसर मिल रहे हैं। संस्थान ने हिमालयी परिस्थितियों के अनुकूल लैवेंडर और कैमोमाइल जैसी फसलों की उन्नत किस्में भी विकसित की हैं।

पुष्पकृषि के क्षेत्र में संस्थान की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के ट्यूलिप गार्डन आज कृषि – पर्यटन का बड़ा आकर्षण बन चुके हैं। इस वर्ष इन उद्यानों में 15 लाख से अधिक पर्यटक पहुंचे। उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश, लद्दाख, उत्तराखंड, पंजाब और हरियाणा के हजारों किसान संस्थान द्वारा समर्थित पुष्पकृषि गतिविधियों से लाभान्वित हो रहे हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत हींग, केसर, दालचीनी और मोंक फूट जैसी फसलों की खेती को बढ़ावा देकर आयात पर निर्भरता कम करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विज्ञान, नवाचार और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से हिमालयी क्षेत्र की अपार संभावनाओं को आर्थिक विकास से जोड़ा जा रहा है। उन्होंने वैज्ञानिकों, किसानों, उद्योगों और स्टार्टअप्स के बीच सहयोग बढ़ाने पर बल देते हुए कहा कि हिमालयी क्षेत्र भारत की भविष्य की जैव – अर्थव्यवस्था और सतत विकास यात्रा में निर्णायक योगदान देने की क्षमता रखता है।

'वोकल फॉर लोकल' और 'लोकल टू ग्लोबल' अभियान से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिली नई ताकत

खादी और ग्रामोद्योग का कारोबार पहली बार 1.87 लाख करोड़ रुपये के पार

शिमला। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में खादी और ग्रामोद्योग क्षेत्र ने वित्त वर्ष 2025 – 26 में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए पहली बार 1.87 लाख करोड़ रुपये के कारोबार का आंकड़ा पार कर लिया है। खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) द्वारा जारी अनंतिम आंकड़ों के अनुसार इस क्षेत्र ने उत्पादन, बिक्री और रोजगार सृजन के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

नई दिल्ली स्थित गांधी दर्शन, राजघाट कार्यालय में केवीआईसी अध्यक्ष मनोज कुमार ने वित्त वर्ष 2025 – 26 के अनंतिम आंकड़े जारी करते हुए बताया कि पिछले 12 वर्षो में बिक्री में 501 प्रतिशत और उत्पादन में 380 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2013 – 14 में जहां खादी एवं ग्रामोद्योग उत्पादों की बिक्री 31,154 करोड़ रुपये थी, वहीं अब यह बढ़कर 1,87,105 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। इसी अवधि में उत्पादन 26,109 करोड़ रुपये से बढ़कर 1,25,296 करोड़ रुपये हो गया है। खादी वस्त्रों के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2013 – 14 में खादी वस्त्रों का उत्पादन 811 करोड़ रुपये था, जो अब बढ़कर 3,974 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। वहीं बिक्री 1,081 करोड़ रुपये से बढ़कर 7,869 करोड़ रुपये हो गई है। प्रधानमंत्री द्वारा खादी के लगातार प्रचार – प्रसार का सकारात्मक प्रभाव इस क्षेत्र में साफ दिखाई दे रहा है।

रोजगार सृजन के क्षेत्र में भी केवीआईसी ने बड़ी उपलब्धि हासिल की है। पिछले 12 वर्षो में रोजगार में 56 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और अब इस क्षेत्र से 2.04 करोड़ लोगों को रोजगार मिल रहा है। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) के तहत वित्त वर्ष 2025 – 26 में 66,494 नई इकाइयां स्थापित की गई, जिनसे 7.31 लाख लोगों को रोजगार मिला।

केवीआईसी अध्यक्ष मनोज कुमार ने कहा कि 'आत्मनिर्भर भारत', 'वोकल फॉर लोकल' और 'लोकल टू ग्लोबल' जैसे अभियानों के कारण खादी आज ग्रामीण भारत की आर्थिक ताकत और स्वदेशी गौरव का प्रतीक बन चुकी है।

हिमाचल के सरकारी स्कूलों को बनाया जाएगा देश में सर्वश्रेष्ठ:मुख्यमंत्री

छोटा शिमला स्कूल में विद्यार्थियों से संवाद, एंटी-चिट्टा अभियान में युवाओं से सहयोग की अपील

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने नव स्तरोन्नत सीबीएसई राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, छोटा शिमला में विद्यार्थियों के साथ संवाद करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार हिमाचल के सरकारी स्कूलों को देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान बनाने की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार किए गए हैं, जिनके सकारात्मक परिणाम अब सामने आने लगे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी स्कूलों के शिक्षक योग्य और मेहनती होते हैं तथा उनकी नियुक्ति प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से होती है।

संवाद के दौरान विद्यार्थियों ने मुख्यमंत्री से शिक्षा, खेल, करियर और निजी जीवन से जुड़े कई सवाल पूछे। छात्र आरव ठाकुर के प्रश्न पर मुख्यमंत्री ने बताया कि वे छात्र जीवन में वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे और हॉकी, क्रिकेट तथा हैंडबॉल खेलते थे। उन्होंने कहा कि वे हैंडबॉल टीम के कप्तान भी रहे हैं तथा उन्हें ट्रैकिंग का भी शौक रहा है।

विद्यालय के विद्यार्थियों ने भौतिकी और राजनीति विज्ञान विषय के शिक्षकों की कमी का मुद्दा भी उठाया। इस पर मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि 30 जून से पहले सभी रिक्त पद भर दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि सीबीएसई प्रणाली लागू होने से विद्यार्थियों को अधिक विषय विकल्प उपलब्ध होंगे।

कक्षा 12 के छात्र दिव्यांश द्वारा अंक और कौशल के महत्व पर पूछे गए प्रश्न के उत्तर में मुख्यमंत्री ने कहा कि अच्छे अंक जरूरी हैं, लेकिन विद्यार्थियों को कुशल और सक्षम भी बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि अनुशासन, समर्पण और निरंतर मेहनत ही सफलता की कुंजी है।

मुख्यमंत्री ने नशा-निवारण अभियान में युवाओं की भूमिका को भी महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि नशा तस्कर युवाओं को पहले नशे का आदी बनाते हैं और बाद में उन्हें तस्करी में शामिल कर लेते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से नशे के खिलाफ जागरूकता फैलाने और 5 जून को शिमला में आयोजित होने वाली एंटी-चिट्टा रैली में भाग लेने का आहवान किया।

हिमकेयर के बकाया भुगतान के लिए 100 करोड़ रुपये जारी

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में कहा कि प्रदेश सरकार ने हिमकेयर योजना के तहत लंबित भुगतानों के निपटारे के लिए 100 करोड़ रुपये जारी कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार लोगों को उनके घर के नजदीक बेहतर और विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है तथा इसी दिशा में पिछले साढ़े तीन वर्षों के दौरान कई महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने बताया कि अटल इंस्टीटयूट ऑफ मेडिकल सुपर स्पेशियलिटीज चमियाणा, इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल शिमला तथा डॉ. राजेंद्र प्रसाद राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय टांडा में अत्याधुनिक ऑटोमेटेड प्रयोगशालाएं स्थापित करने के लिए 75 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं। इन प्रयोगशालाओं में खून के एक ही नमूने से कई प्रकार की जांचें संभव होंगी, जिससे मरीजों को तेज और सटीक स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकेंगी। उन्होंने कहा कि इन प्रयोगशालाओं के लिए आवश्यक उपकरणों की खरीद प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इसके अलावा टांडा और डॉ. राधाकृष्णन राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय हमीरपुर में पीईटी स्कैन मशीनों की स्थापना के लिए भी निविदाएं आमंत्रित की गई हैं।

बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार आधुनिक चिकित्सा उपकरणों की खरीद पर लगभग 3,000 करोड़ रुपये खर्च कर रही है। उनका उद्देश्य राज्य के अस्पतालों को विश्वस्तरीय तकनीक से सुसज्जित करना है ताकि मरीजों को बेहतर उपचार के लिए प्रदेश से बाहर न जाना पड़े।

उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को एमआरआई, सीटी स्कैन और अन्य महत्वपूर्ण जांचों के लिए प्रतीक्षा अवधि शून्य करने के निर्देश दिए। साथ ही चिकित्सा महाविद्यालयों में बड़ी सर्जरी के लिए भी प्रतीक्षा अवधि समाप्त करने पर बल दिया, ताकि मरीजों को समय पर इलाज मिल सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि चिकित्सकों, पैरामेडिकल और तकनीकी कर्मचारियों के रिक्त पदों को प्राथमिकता के आधार पर भरा जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने मरीजों को ब्रांडेड और गुणवत्तापूर्ण दवाइयां उपलब्ध कराने के निर्देश भी दिए। इसके लिए हिमाचल प्रदेश राज्य नागरिक आपूर्ति निगम को दवाओं की खरीद की जिम्मेदारी देने पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र में आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए सरकार हरसंभव प्रयास कर रही है और संसाधनों की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से जनगणना कार्य में भाग लेने का किया आग्रह

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने प्रदेशवासियों से जनगणना-2027 में बढ़-चढ़ कर भाग लेने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि जनगणना देश के विकास और लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूत आधारशिला है तथा इससे प्राप्त आंकड़े भविष्य की योजनाओं और नीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निदेशक जनगणना निदेशालय हिमाचल प्रदेश दीप शिखा शर्मा ने मुख्यमंत्री से भेंट कर उन्हें जनगणना-2027 की तैयारियों और विभिन्न चरणों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जनगणना दो चरणों में संपन्न की जाएगी। पहले चरण में मकान सूचीकरण और मकान गणना का कार्य किया जाएगा, जबकि दूसरे चरण में जनसंख्या की गणना होगी।

उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश में प्रथम चरण 16 जून से 15 जुलाई 2026 तक आयोजित किया जाएगा। इस बार लोगों को स्व-गणना की नई सुविधा भी उपलब्ध करवाई गई है, जिसके तहत नागरिक 1 जून से 15 जून 2026 तक ऑनलाइन पोर्टल se.census.gov.in पर स्वयं अपनी जानकारी दर्ज कर सकेंगे।

दीप शिखा शर्मा ने कहा कि इस बार जनगणना पूरी तरह डिजिटल मोड में होगी। प्रगणक और पर्यवेक्षक मोबाइल के माध्यम से सरकार द्वारा निर्धारित 33 प्रश्नों के आधार पर प्रदेश के सभी मकानों और परिवारों की जानकारी एकत्रित करेंगे।

उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश के हिमाच्छादित क्षेत्रों में दूसरे चरण का कार्य 11 सितंबर से 30 सितंबर 2026 तक किया जाएगा, जबकि शेष क्षेत्रों में यह प्रक्रिया 9 फरवरी से 28 फरवरी 2027 तक चलेगी।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से अपील की कि वे इस राष्ट्रीय महत्व के अभियान में सहयोग करें ताकि सही और सटीक आंकड़ों के आधार पर प्रदेश के विकास को नई दिशा दी जा सके।

प्रधानमंत्री विकास योजना के तहत हिमाचल के 2,420 युवाओं और महिलाओं को मिलेगा प्रशिक्षण

शिमला/शैल। केंद्र सरकार के अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय ने हिमाचल प्रदेश उद्यमिता विकास केंद्र (एचपीसीईडी) को प्रधानमंत्री विकास (पीएम विकास) योजना के क्रियान्वयन के लिए प्रोजेक्ट इम्प्लीमेंटिंग एजेंसी (पीआईए) के रूप में चयनित किया है। इस योजना के तहत हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों में 2,420 युवाओं और महिलाओं को कौशल विकास एवं उद्यमिता से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

इस संबंध में 29 मई 2026 को अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय की निदेशक नेहा गिरी और हिमाचल प्रदेश उद्यमिता विकास केंद्र की संयुक्त निदेशक (उद्योग) एवं कार्यकारी निदेशक दीपिका खत्री के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।

योजना के तहत 1,700 महिलाओं को महिला नेतृत्व एवं उद्यमिता कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण दिया जाएगा, जबकि 720 अभ्यर्थियों को गैर-पारंपरिक क्षेत्रों से जुड़े प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल किया जाएगा। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य युवाओं और महिलाओं को रोजगार और स्वरोजगार के लिए सक्षम बनाना है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में माउंटेन क्यूज़ीन, फैशन डिजाइनिंग, ब्यूटी थेरेपी, नेतृत्व विकास और बिजनेस मेंटरिंग जैसे विषय शामिल किए गए हैं। इन कार्यक्रमों को प्रदेश के विभिन्न जिलों में चरणबद्ध तरीके से संचालित किया जाएगा ताकि अधिक से अधिक लोग इसका लाभ उठा सकें।

योजना के अंतर्गत प्रतिभागियों को केवल प्रशिक्षण ही नहीं बल्कि प्रमाणन, मार्गदर्शन और हैंडहोल्डिंग जैसी सुविधाएं भी प्रदान की जाएंगी। इससे लाभार्थियों की रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी और उन्हें उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक सहयोग मिलेगा। दीपिका खत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री विकास योजना हिमाचल प्रदेश के युवाओं और महिलाओं के लिए नए अवसर लेकर आएगी तथा यह पहल कौशल विकास, स्वरोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

आईआईआईटी ऊना के एम.टेक छात्रों का डेलॉइट, इंफोसिस और पीजीआईएमईआर में चयन

शिमला/शैल। भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईआईटी) ऊना के एम.टेक (कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग) के पहले स्नातक बैच ने रोजगार और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। संस्थान के छात्रों का चयन देश की प्रतिष्ठित कंपनियों और अनुसंधान संस्थानों में हुआ है, जबकि कई विद्यार्थियों ने उच्च शिक्षा और शोध के लिए अग्रणी संस्थानों का रुख किया है।

आईआईआईटी ऊना के एम.टेक (सीएसई) के प्रथम बैच में 17 छात्र शामिल थे, जिन्होंने ग्रेजुएट एप्टीटयूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट) के माध्यम से प्रवेश प्राप्त किया था। इस बैच ने शैक्षणिक और पेशेवर दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर संस्थान का नाम रोशन किया है।

चयनित विद्यार्थियों में शिवानी प्रजापति को इंफोसिस में डेटा एनालिस्ट तथा इंटेलीपाट में टेक्निकल रिसर्च एनालिस्ट के पदों के लिए नियुक्ति प्रस्ताव मिले हैं। अनुप्रिया शर्मा और शिवांगी ठाकुर का चयन डेलॉइट में टेक्निकल एनालिस्ट के रूप में हुआ है। साइमा फिरदौश और आदर्श खत्री को एनएक्सटवेव में सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट इंस्ट्रक्टर के पद पर अवसर मिला है। आदित्य राणा और हितेश कुमार को इंटेलीपाट में टेक्निकल रिसर्च एनालिस्ट के रूप में नियुक्त किया गया है, जबकि सक्षम शर्मा का चयन पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ में प्रोजेक्ट रिसर्च साइंटिस्ट के पद पर हुआ है।

इस उपलब्धि पर आईआईआईटी ऊना के निदेशक प्रोफेसर मनीष गौर ने कहा कि पहले एम.टेक बैच की सफलता संस्थान के मजबूत शैक्षणिक वातावरण और शोध-उन्मुख शिक्षा का परिणाम है। उन्होंने कहा कि छात्रों का प्रतिष्ठित कंपनियों और अनुसंधान संस्थानों में चयन तथा कई विद्यार्थियों का उच्च शिक्षा के लिए अग्रणी संस्थानों का चयन करना संस्थान में उपलब्ध कराई जा रही गुणवत्तापूर्ण स्नातकोत्तर शिक्षा का प्रमाण है।

संस्थान के संकाय सदस्यों और करियर डेवलपमेंट सेल ने छात्रों को तकनीकी प्रशिक्षण, शोध मार्गदर्शन, करियर परामर्श और साक्षात्कार तैयारी में निरंतर सहयोग प्रदान किया। एम.टेक के पहले बैच की यह सफलता आईआईआईटी ऊना की शैक्षणिक उत्कृष्टता और नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

हिमाचल में 16 जून से शुरू होगा जनगणना – 2027 का प्रथम चरण

डिजिटल मोड में होगी मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना, नागरिकों को मिलेगी स्व – गणना सुविधा

शिमला/शैल। भारत की जनगणना 2027 के प्रथम चरण यानी मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का आयोजन हिमाचल प्रदेश में 16 जून 2026 से 15 जुलाई 2026 तक किया जाएगा। यह चरण राज्य के प्रत्येक परिवार, मकान, आवासीय स्थिति और उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी एकत्रित करने के लिए संचालित किया जाएगा। जनगणना देश के विकास, संसाधनों के वितरण और नीतियों के निर्माण का महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है।

जनगणना निदेशालय, हिमाचल प्रदेश द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार इस बार नागरिकों की सुविधा के लिए स्व-गणना (Self Enumeration) की व्यवस्था भी की गई है। प्रदेशवासी 1 जून से 15 जून 2026 तक se.census.gov.in पोर्टल पर जाकर अपने परिवार की जानकारी स्वयं ऑनलाइन दर्ज कर सकेंगे। इससे लोगों को सुविधा मिलेगी और गणनाकारों के कार्य में भी तेजी आएगी।

जनगणना के प्रथम चरण में आवासीय स्थिति, मूलभूत सुविधाओं और परिवारों की परिसंपत्तियों से संबंधित जानकारी जुटाई जाएगी। इसके लिए कुल 33 प्रश्न निर्धारित किए गए हैं, जिनमें मोबाइल नंबर से संबंधित प्रश्न भी शामिल होगा।

इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए हिमाचल प्रदेश में लगभग 20,630 प्रगणकों और पर्यवेक्षकों की तैनाती की जाएगी। इनके प्रशिक्षण कार्यक्रम सभी जिलों में पूरे किए जा चुके हैं, जबकि प्रगणकों और पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण 1 जून से 12 जून 2026 के बीच आयोजित किया जाएगा।

इस बार जनगणना पूरी तरह डिजिटल मोड में संचालित होगी। डेटा संग्रहण के लिए विशेष रूप से विकसित HLO मोबाइल ऐप का उपयोग किया जाएगा, जिससे रियल टाइम डेटा अपलोडिंग, पारदर्शिता और त्रुटियों में कमी सुनिश्चित की जा सकेगी।

जनगणना निदेशालय ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि वे सही और पूर्ण जानकारी देकर जनगणना कार्य में सहयोग करें। निदेशालय ने स्पष्ट किया कि जनगणना के दौरान दी गई सभी जानकारियां जनगणना अधिनियम 1948 के तहत पूर्णत: गोपनीय रखी जाएंगी।

आईएचबीटी हिमालयी अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने वाला संस्थान:सुरेश कश्यप

शिमला/शैल। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद सुरेश कश्यप ने केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री

डॉ. जितेंद्र सिंह के पालमपुर स्थित सीएसआईआर-हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (आईएचबीटी) दौरे का स्वागत करते हुए कहा कि यह संस्थान हिमाचल प्रदेश सहित पूरे हिमालयी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने की क्षमता रखता है। उन्होंने कहा कि आईएचबीटी विज्ञान, अनुसंधान, स्टार्टअप और जैविक उत्पादों के माध्यम से आत्मनिर्भर हिमाचल के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सुरेश कश्यप ने कहा कि डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा संस्थान की वैज्ञानिक उपलब्धियों, अनुसंधान कार्यों और स्वदेशी उत्पाद विकास की सराहना यह दर्शाती है कि केंद्र सरकार विज्ञान एवं नवाचार आधारित विकास को प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है तथा सीएसआईआर – आईएचबीटी जैसे संस्थान इस परिवर्तन के प्रमुख केंद्र बनकर उभरे हैं।

उन्होंने कहा कि आईएचबीटी अरोमा मिशन, फ्लोरीकल्चर, औषधीय एवं सुगंधित पौधों के संवर्धन, जैव प्रौद्योगिकी और कृषि अनुसंधान के माध्यम से किसानों, बागवानों और युवाओं को नए अवसर उपलब्ध करा रहा है। इससे किसानों की आय बढ़ने के साथ-साथ स्वरोजगार और उद्यमिता को भी प्रोत्साहन मिल रहा है।

सुरेश कश्यप ने 12 प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौतों को बड़ी उपलब्धि बताते हुए कहा कि इससे प्रयोगशालाओं में विकसित तकनीकों का लाभ सीधे किसानों, उद्योगों और आम लोगों तक पहुंचेगा। उन्होंने इसे लैब टू लैंडऔर लैब टू मार्केट की सोच को साकार करने वाला महत्वपूर्ण कदम बताया।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के प्राकृतिक और जैविक संसाधन राज्य की बड़ी ताकत हैं तथा वैज्ञानिक संस्थानों और उद्योगों के बीच बढ़ता सहयोग प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगा। उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में आईएचबीटी हिमालयी क्षेत्र के किसानों, युवाओं और शोधकर्ताओं के लिए अवसरों का बड़ा केंद्र बनेगा।

भारतीय सेना के संयुक्त प्रयासों से कसौली के जंगलों की आग पर पाया गया काबू

शिमला/शैल। कसौली के पश्चिमी ढलानों पर स्थित गिल्बर्ट ट्रेल और अपर मॉल क्षेत्र में भड़की भीषण वनाग्नि पर भारतीय सेना, भारतीय वायुसेना और स्थानीय प्रशासन के संयुक्त प्रयासों से सफलतापूर्वक काबू पा लिया गया। यह अभियान 15 घंटे से अधिक समय तक लगातार जारी रहा, जिसमें सेना ने कठिन परिस्थितियों में दिन-रात राहत और अग्निशमन कार्य किया।

आग लगने के बाद भारतीय सेना की कसौली ब्रिगेड ने तुरंत कार्रवाई शुरू की। घने जंगलों और दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में फैल रही आग को रोकने के लिए सेना के जवानों, फायर टेंडरों और जल वाहनों को मौके पर तैनात किया गया। भारतीय वायुसेना के हेलीकॉप्टरों ने सुखना झील से पानी भरकर बम्बी बकेट सॉटज़ के माध्यम से हवाई अग्निशमन अभियान चलाया, जिससे आग को संवेदनशील वन क्षेत्रों तक फैलने से रोका जा सका।

संयुक्त अभियान के दौरान सेना के लड़ाकू और गैर-लड़ाकू दोनों प्रकार के कर्मियों ने फायरब्रेक तैयार करने, संवेदनशील इलाकों को सुरक्षित करने और शेष हॉटस्पॉट्स को बुझाने का कार्य 15 घंटे तक चला अभियान, वायुसेना और लगातार जारी रखा। दुर्गम क्षेत्रों में हवाई अग्निशमन अभियान अब भी जारी है

ताकि आग दोबारा न भड़क सके।

राहत की बात यह रही कि अभियान में शामिल सभी जवान और स्थानीय प्रशासन ने भी निभाई अहम भूमिका उपकरण सुरक्षित रहे तथा किसी भी नागरिक या राहतकर्मी के घायल होने की सूचना नहीं मिली। पश्चिमी कमान के आर्मी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल पुष्पेन्द्र सिंह ने प्रभावित क्षेत्र का दौरा कर अभियान की समीक्षा की और जवानों की त्वरित कार्रवाई, साहस और समर्पण की सराहना की। उन्होंने अभियान में सक्रिय रूप से शामिल कर्मियों को ऑन-द-स्पष्ट प्रशंसा पत्र भी प्रदान किए।

यह अभियान प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भारतीय सशस्त्र बलों की तत्परता, समन्वय क्षमता और जनसेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का उदाहरण बनकर सामने आया है।

90 करोड़ आभा खातों के साथ भारत ने डिजिटल स्वास्थ्य क्षेत्र में रचा नया इतिहास

शिमला/शैल। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) ने देश में 90 करोड़ से अधिक आयुष्मान भारत

स्वास्थ्य खाते (आभा) बनाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण द्वारा संचालित यह पहल भारत को एक मजबूत, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित डिजिटल स्वास्थ्य प्रणाली की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह उपलब्धि डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में देश की बढ़ती प्रगति और नागरिकों के विश्वास को दर्शाती है।

आभा एक 14 अंकों की विशिष्ट डिजिटल स्वास्थ्य पहचान संख्या है, जो नागरिकों को उनके स्वास्थ्य रिकॉर्ड को सुरक्षित रूप से जोड़ने, देखने और जरूरत पड़ने पर साझा करने की सुविधा प्रदान करती है। इसके माध्यम से विभिन्न अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों और डिजिटल स्वास्थ्य प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध चिकित्सा जानकारी को एकीकृत किया जा सकता है। इससे मरीजों को बार-बार कागजी दस्तावेज साथ रखने की आवश्यकता नहीं रहती और उपचार प्रक्रिया अधिक सुगम एवं प्रभावी बनती है।

आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन की शुरुआत के बाद से आभा खातों की संख्या में लगातार वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2021 में जहां 14.7 करोड़ आभा खाते थे, वहीं 2022 में यह संख्या बढ़कर 30.4 करोड़, 2023 में 50.6 करोड़, 2024 में 72.2 करोड़ और 2025 में 84.5 करोड़ तक पहुंच गई। वर्ष 2026 में यह आंकड़ा 90 करोड़ के ऐतिहासिक स्तर को पार कर गया है। यह वृद्धि डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति लोगों की बढ़ती जागरूकता और स्वीकार्यता को दर्शाती है।

राज्यों के प्रदर्शन की बात करें तो उत्तर प्रदेश 15.3 करोड़ से अधिक आभा खातों के साथ देश में सबसे आगे है। राजस्थान और महाराष्ट्र ने भी 7 करोड़ से अधिक खाते बनाकर उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। आबादी के अनुपात में आंध्र प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। हिमाचल प्रदेश में लगभग 88.9 प्रतिशत आबादी के आभा खाते बनाए जा चुके हैं।

इस उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण पहलू महिलाओं की भागीदारी है। कुल आभा खाताधारकों में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 49.75 प्रतिशत है, जो डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं के समावेशी विस्तार को दर्शाती है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण का मानना है कि आभा के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच, पारदर्शिता और गुणवत्ता में सुधार होगा तथा देश को एक आधुनिक और डिजिटल स्वास्थ्य तंत्र की दिशा में आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।

क्रैक अकादमी और रियल एस्टेट मामले पर सुधीर शर्मा ने उठाए सवाल

शिमला/शैल। भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं विधायक सुधीर शर्मा ने क्रैक अकादमी और उससे जुड़े कथित रियल एस्टेट मामले को लेकर प्रदेश सरकार पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा है कि जिस संस्था को कांग्रेस सरकार ने हजारों युवाओं के भविष्य से जोड़कर बड़े स्तर पर प्रचारित किया था, आज उसी संस्था से जुड़े लोगों के नाम प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच और कार्रवाई में सामने आने से कई महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े हो गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार को इस पूरे मामले पर जनता के सामने स्पष्ट जवाब देना चाहिए।

सुधीर शर्मा ने कहा कि नवंबर 2024 में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने स्वयं क्रैक अकादमी के साथ बैठक कर 6800 विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग उपलब्ध करवाने के लिए लगभग 34 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति योजना का प्रचार किया था। उस समय इसे दुनिया का सबसे बड़ा सरकारी सहायता प्राप्त छात्रवृत्ति कार्यक्रम बताया गया और प्रदेशभर में इसका व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। उन्होंने कहा कि अब मीडिया रिपोर्टों के अनुसार रियल एस्टेट समूह से जुड़े दो प्रमोटरों की ईडी द्वारा गिरफ्तारी की गई है तथा मनी लॉन्ड्रिंग और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े मामलों की जांच चल रही है। ऐसे में सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि जिन संस्थाओं और व्यक्तियों के साथ वह सार्वजनिक मंचों पर साझेदारी कर रही थी, उनके चयन और सत्यापन की प्रक्रिया क्या थी।

उन्होंने कहा कि भाजपा किसी जांच को प्रभावित नहीं करना चाहती और कानून को अपना कार्य करने देना चाहिए, लेकिन जब प्रदेश सरकार स्वयं किसी निजी संस्था को सरकारी कार्यक्रमों का चेहरा बनाकर प्रस्तुत करती है तो उसकी जवाबदेही भी तय होनी चाहिए। प्रदेश के हजारों छात्र और उनके अभिभावक जानना चाहते हैं कि इस छात्रवृत्ति योजना की वर्तमान स्थिति क्या है, कितने विद्यार्थियों को इसका लाभ मिला और किन मानकों के आधार पर इस संस्था का चयन किया गया था।

सुधीर शर्मा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकार ने सत्ता में आने के बाद बड़े-बड़े दावे और प्रचार किए, लेकिन पारदर्शिता और जवाबदेही के मामले में कई सवाल खड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि जब ईडी की कार्रवाई और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़ी खबरें सामने आ रही हैं तो सरकार को चुप्पी तोड़कर प्रदेश की जनता के सामने पूरी सच्चाई रखनी चाहिए। उन्होंने मुख्यमंत्री से यह भी पूछा कि क्या सरकार इस पूरे मामले की स्वतंत्र समीक्षा कराएगी और यदि किसी स्तर पर सरकारी प्रक्रियाओं में चूक हुई है तो उसके लिए कौन जिम्मेदार होगा।

भाजपा विधायक ने कहा कि उनकी पार्टी प्रदेश के युवाओं, छात्रों और अभिभावकों के हितों की रक्षा के लिए इस मुद्दे को लगातार उठाती रहेगी। उन्होंने कहा कि जनता के धन और युवाओं के भविष्य से जुड़े किसी भी मामले में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित होना आवश्यक है। सुधीर शर्मा ने कांग्रेस सरकार से राजनीतिक प्रचार से ऊपर उठकर तथ्यों के आधार पर जवाब देने की मांग करते हुए कहा कि प्रदेश की जनता अब केवल घोषणाएं नहीं, बल्कि सच्चाई और जवाबदेही चाहती है।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177-2805015, 94180-15015 फैक्स: 2805015

आत्ममंथन की बजाये आंकड़ों में जीत की तलाश

शिमला/शैल। नगर निगम चुनावों में धर्मशाला, मंडी और सोलन जैसे प्रमुख शहरी निकायों में कांग्रेस की हार के बाद मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने चुनाव परिणामों को जनता के विश्वास और सरकार की नीतियों पर मुहर बताया है। लेकिन राजनीतिक गलियारों में अब सबसे बड़ा सवाल यही उठ रहा है कि क्या वास्तव में शहरी मतदाताओं ने सरकार के पक्ष में जनादेश दिया है या फिर सरकार व्यापक आंकड़ों के सहारे अपनी राजनीतिक असहजता को ढकने का प्रयास कर रही है?

मुख्यमंत्री ने प्रेस वार्ता में कहा कि प्रदेश के 53 शहरी स्थानीय निकायों में हुए चुनावों में कांग्रेस ने 29 निकायों में जीत दर्ज की है। साथ ही पंचायत चुनावों में कांग्रेस समर्थित 2400 प्रधान और 2300 उपप्रधान चुने जाने का दावा भी किया गया। पहली नजर में ये आंकड़े कांग्रेस के लिए संतोषजनक दिखाई देते हैं, लेकिन राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि असली राजनीतिक संदेश उन नगर निगमों से निकला है जहां चुनाव सीधे पार्टी चिन्ह पर लड़े गए और जहां जनता ने सीधे कांग्रेस तथा भाजपा के बीच चुनाव किया।

हिमाचल प्रदेश के नगर निगम चुनावों की विशेषता यही थी कि यहां मतदाता को यह स्पष्ट पता था कि वह किस दल के पक्ष या विपक्ष में मतदान कर रहा है। धर्मशाला, मंडी और सोलन में कांग्रेस की हार केवल स्थानीय उम्मीदवारों की हार नहीं मानी जा रही, बल्कि इसे सीधे सरकार के प्रदर्शन और मुख्यमंत्री के नेतृत्व पर जनता की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने अपनी प्रेस वार्ता में विकास, पारदर्शिता और जनकल्याण की राजनीति को जनता का समर्थन मिलने की बात कही। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि चुनाव परिणामों के बाद मुख्यमंत्री ने आत्ममंथन की बजाये जीत के व्यापक आंकड़ों पर जोर दिया है। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि यह रणनीति अल्पकालिक राहत तो दे सकती है, लेकिन इससे उन वास्तविक कारणों की अनदेखी होने का खतरा है जिन्होंने कांग्रेस को शहरी क्षेत्रों में नुकसान पहुंचाया।

कांग्रेस के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती विपक्ष नहीं, बल्कि जनता के बीच बन रही वह धारणा है कि सरकार अपनी कमियों को स्वीकार करने के बजाये आंकड़ों की व्याख्या के जरिए राजनीतिक संदेश बदलने का प्रयास कर रही है। यदि नगर निगम चुनावों के स्पष्ट संकेतों को केवल सांख्यिकीय जीत के तर्क से दबाने की कोशिश की गई, तो यह 2027 के विधानसभा चुनावों से पहले पार्टी के लिए और बड़ी चुनौती बन सकती है।

राजनीति में अंततः जनता का मनोविज्ञान आंकड़ों से अधिक प्रभावशाली होता है। सवाल यह नहीं है कि कांग्रेस ने कितने निकाय जीते, बल्कि यह है कि जिन चुनावों को सरकार और विपक्ष दोनों ने प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाया था, वहां जनता ने किसे अपना विश्वास सौंपा। यही सवाल आने वाले दिनों में हिमाचल की राजनीति का सबसे बड़ा मुद्दा बनने वाला है।

परिणाम जानते थे इसलिए चुनाव से भाग रहे थे मुख्यमंत्री:जयराम

शिमला/शैल। पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने स्थानीय निकाय और पंचायती राज चुनावों के परिणामों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खू को पहले से ही चुनावी नतीजों का अंदाजा था, इसलिए वे चुनाव करवाने से बच रहे थे। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव टालने के कई प्रयास किए गए, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के बाद चुनाव करवाने पड़े। उन्होंने यह भी कहा कि चुनाव के दौरान आचार संहिता का उल्लंघन कर मतदाताओं को प्रभावित करने की कोशिश की गई, लेकिन जनता ने कांग्रेस को नकार दिया।

जयराम ठाकुर ने दावा किया कि स्थानीय निकाय और पंचायती राज संस्थाओं के चुनावों में कांग्रेस को करारी हार का सामना करना पड़ा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री और कई मंत्री अपने-अपने क्षेत्रों में जनता का विश्वास हासिल नहीं कर सके। उनके अनुसार जिला परिषद, ब्लॉक समिति और नगर निगम चुनावों में भाजपा समर्थित उम्मीदवारों को व्यापक समर्थन मिला और पार्टी को प्रदेशभर में 60 प्रतिशत से अधिक वोट प्राप्त हुए।

उन्होंने चुनावों में भाजपा को समर्थन देने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व पर भरोसा जताने के लिए प्रदेश की जनता का आभार व्यक्त किया। जयराम ठाकुर ने कहा कि कांग्रेस की चुनावी गारंटियों और सरकार के दावों पर अब लोगों का विश्वास नहीं रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्री से प्रदेश हित में ईमानदारी से काम करने और झूठे वादों से बचने का आग्रह किया।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि चुनाव परिणाम यह संकेत दे रहे हैं कि भविष्य में कांग्रेस की राजनीतिक स्थिति और कमजोर हो सकती है। उन्होंने राज्य सरकार से केंद्र सरकार की योजनाओं और आर्थिक सहायता को प्रभावी ढंग से लागू करने तथा पात्र लोगों तक लाभ पहुंचाने की मांग की।

जयराम ठाकुर ने प्रदेश में कार्यवाहक मुख्य सचिव की नियुक्ति को लेकर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि सरकार स्थायी नियुक्तियां करने से बच रही है और वरिष्ठ अधिकारियों को लंबे समय तक कार्यवाहक जिम्मेदारियों पर रखा जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर प्रशासनिक व्यवस्था का मजाक बनाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में स्थायी मुख्य सचिव और अन्य शीर्ष प्रशासनिक पदों पर नियमित नियुक्तियां होनी चाहिए ताकि प्रशासनिक कामकाज अधिक प्रभावी और जवाबदेह बन सके। उनके अनुसार सरकार को अस्थायी व्यवस्थाओं के बजाय स्थायी प्रशासनिक ढांचे को मजबूत करने पर ध्यान देना चाहिए।

जनता ने भाजपा के पक्ष में दिया स्पष्ट जनादेश:बिंदल

शिमला/शैल। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल ने पंचायती राज संस्थाओं, नगर निकायों और नगर निगम चुनावों के परिणामों को कांग्रेस सरकार के खिलाफ जनमत संग्रह करार देते हुए कहा है कि प्रदेश की जनता ने मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व वाली सरकार को पूरी तरह नकार दिया है। उन्होंने दावा किया कि चुनाव परिणामों ने स्पष्ट कर दिया है कि प्रदेश में भाजपा के प्रति जनविश्वास मजबूत हुआ है, जबकि कांग्रेस सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ व्यापक जनाक्रोश सामने आया है।

डॉ. बिंदल ने कहा कि नगर निकाय चुनावों में भाजपा समर्थित उम्मीदवारों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अधिकांश नगर परिषदों और नगर पंचायतों में बढ़त हासिल की। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस अपने समर्थित उम्मीदवारों की घोषणा तक नहीं कर सकी, जबकि भाजपा ने अधिकृत रूप से अपने प्रत्याशियों और समर्थित उम्मीदवारों की सूची जारी की थी। उन्होंने कहा कि इसके बावजूद मुख्यमंत्री द्वारा 75 प्रतिशत निकायों में जीत का दावा करना तथ्यों से परे और जनता को भ्रमित करने का प्रयास है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कांग्रेस सरकार पर जनादेश का सम्मान न करने का आरोप लगाते हुए कहा कि नगर परिषदों के चुनाव परिणाम आने के बाद जानबूझकर अधिसूचनाएं जारी करने में देरी की गई, जिसके कारण भाजपा को न्यायालय की शरण लेनी पड़ी। उन्होंने कहा कि अदालत के हस्तक्षेप के बाद ही सरकार को अधिसूचनाएं जारी करनी पड़ीं, जो लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति कांग्रेस की सोच को उजागर करता है।

डॉ. बिंदल ने आरोप लगाया कि सरकार ने चेयरमैन और वाइस चेयरमैन के चुनाव संबंधी नियमों में बदलाव कर खरीद-फरोख्त की संभावनाओं को बढ़ावा देने का प्रयास किया है। उनके अनुसार पहले निर्धारित समयसीमा में चुनाव कराने का प्रावधान था, लेकिन अब अधिकारियों को बैठक बुलाने के लिए अधिक अधिकार देकर राजनीतिक हस्तक्षेप का रास्ता खोला गया है। उन्होंने इसे जनता के जनादेश के साथ विश्वासघात बताया।

उन्होंने दावा किया कि प्रदेश की 3759 पंचायतों में हुए चुनावों में भाजपा समर्थित उम्मीदवारों ने बड़ी जीत दर्ज की है। उनके अनुसार लगभग 74 प्रतिशत प्रधान और 77 प्रतिशत उपप्रधान पदों पर भाजपा समर्थित उम्मीदवार विजयी हुए हैं, जो कांग्रेस सरकार के प्रति जनता की नाराजगी को दर्शाता है। उन्होंने मुख्यमंत्री के 80 प्रतिशत जीत के दावों को भी पूरी तरह निराधार बताया।

डॉ. बिंदल ने कहा कि मंडी, धर्मशाला और सोलन नगर निगमों में भाजपा के प्रदर्शन ने कांग्रेस के वास्तविक जनाधार की पोल खोल दी है। उन्होंने कहा कि इन चुनाव परिणामों ने स्पष्ट संकेत दिया है कि प्रदेश की जनता अब कांग्रेस सरकार की नीतियों से संतुष्ट नहीं है और भाजपा को एक मजबूत विकल्प के रूप में देख रही है। उन्होंने इस जीत के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं, समर्थित उम्मीदवारों और मतदाताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह परिणाम जनता के विश्वास, कार्यकर्ताओं की मेहनत और कांग्रेस सरकार के खिलाफ बढ़ते जनाक्रोश का प्रतिबिंब है।